हिन्दी की पहिली पुस्तक।

HINDI FIRST BOOK.

Published by the Canadian Mission

Printed at the Canadian Mission Press.

Tunapuna 1912 Trinidad.

2 *nd Edition] Price 3 cts. [2500 Copies.*

हिन्दी की पहिली पुस्तक।

अ आ इ ई

उ ऊ ऋ ॠ

ए ऐ ओ औ

अं अः

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	स	ह	क्ष	ज्ञ

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

१ पाठ ।

तर	रग	मग
पग	नक	कर

२ पाठ ।

नट	जर	तप
गज	तट	जग
जट	जन	तन

३ पाठ ।

कल	मल	नल
मत	रम	मन
पल	जल	लग

कब	बट	दर
दल	पद	चल
वक	चट	जम

५ पाठ।

जय	चर	डग
वह	नर	रस
डस	रह	वस

६ पाठ।

कद	पर	कल
जब	मन	गच
रख	कम	रह
डर	चट	पद

७ पाठ ।

क	ख	ग	घ	ङ
कब	खर	गत	घर	घट

८ पाठ ।

च	छ	ज	झ	ञ
चट	छब	जप	झट	बच

९ पाठ ।

ट	ठ	ड	ढ	ण
टल	ठस	डस	ढब	गण

१० पाठ ।

त	थ	द	ध	न
तन	थक	दर	धन	नर

११ पाठ ।

प	फ	ब	भ	म
पद	फल	बध	भय	फल

१२ पाठ।

य र ल व श

यह रह लस वह शर

ष स ह क्ष त्र

खब सच हम क्षय त्रय

१३ पाठ।

अ आ इ ई

अब आठ इस ईश

१४ पाठ।

उ ऊ ऋ ॠ

उठ ऊन ऋण उग

१५ पाठ।

ए ऐ ओ औ अं अः

एक ऐठ ओठ और अंग छः

१६ पाठ।

न त ज ल ञ व ब क ग
भ झ म स घ ध प ष फ
य थ र ण ख श ए ऐ ट
ठ ड़ ढ उ ऊ ड ङ द ई
ज्ञ त्र च ह अ अं अः आ
ओ औ छ

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः
ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः
ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः
च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः
ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः
ट टा टि टी टु टू टे टै टो टौ टं टः
ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठै ठो ठौ ठं ठः
ड डा डि डी डु डू डे डै डो डौ डं डः
ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढै ढो ढौ ढं ढः

अ ा

आ का　　　क आ का

काक	जाल	आया	काला
गाल	छाप	छाया	आटा
खाल	थाल	चाटा	साधा
टाट	बाघ	गाना	ताना
पाट	ढाक	माला	काया
डाक	धार	शाखा	ढाला
मास	डाल	बाला	आज्ञा

काठ काट	आज भाग	जाल डाल
ठाठ नाप	आप जाग	राग माल
धान लाद	काम जान	हाथ ताप
दाल भात	आग बार	नाम छाप
थान तान	थाल चाट	बाघ मार
बात मान	आठ बार	ताला डाल
आम खा	घाट पार	आज्ञा मान

इ ि

क इ कि   प ि पि

किन	निस	गिर	तिथि
छिप	रिस	घिन	विधि
नित	लिख	डिग	मिति
पित	जिन	बिष	गिरि
किस	पिक	दिन	निसि
छिल	खिल	मिल	सिधि
घिर	चित	छिन	कटि

हिल मिल	निज सिर	बिन रिस
दिन गिन	फिर लिख	निज चित
निस दिन	झिप छिप	बिल ढिग
नित खिल	छिण भिण	फिर गिर
सिल थाम	निम लिख	नाग बिल
निष पाप	तिथि लिख	झिल मिल
निर विष	हित मित	बिन घिण

ई ी

क ई की   प ई पी

कीच	लीन	पीठ	नीला
ढीठ	नीम	खीर	लाली
छींट	रीझ	जीभ	दही
नीच	डील	झील	खली
नील	जीत	ठीक	कीना
तीन	धीर	वीर	मछली

दीन को भीख
किस की चीर
सिर की टीक
किन की चीख
किस की जीत
वीर बिन धीर
मीत सी पीत
तिल का बीज

किन की खीर
जल की झील
जीत का गीत
नीम काठ काट
झील पार भाग
लीची का फल
आम का रस
झील की मछली

क उ कु   ट उ टु   र उ रु

कुछ	टुक	खुर	कुटी
तुम	भुस	धुन	धुरा
झुक	बुत	रुक	तुला
बुझ	झुक	गुण	गुरु

ऊ

क ऊ कू   ब ऊ बू   र ऊ रू

कूद	धूम	झूठ	रूपा
टूट	भूख	फूट	भालू
धूप	लूट	रूम	पूरा
दूध	चूक	मूछ	लड्डू

कुछ कुछ फूस
मूस को दुम
झूठ मूठ बात
ऊख का रस
रूम की भूम
भूख थी दुःख था

दूर भाग उस पार
उन को ऊन बुन
जिन की धूम धाम
यह फूल किस का
उन की मा पास जा
उस का गुण बूझ

ए े

क ए के   ग ए गे   र ए रे

केश	देह	खेल	केला
ठेस	खेत	फेट	देना
नेव	ढेर	मेघ	मेरी
भेद	पेच	सेठ	बेटा
बेर	भेद	एक	सेही
रेत	पेट	छेद	सेवा

रेल पेल से
देश से भेज
हे मेरे बेटे
उसे घेर ले
तेली से तेल ले
मेले की बेला
हे बेटे एक सेब दे
आध सेर बेर दे

मेघ का पानी
बालू का ढेर
एक भूल की बात
मा बाप की सेवा
हे बेटी मेरे पास आ
ठीक लेन देन कर
खेत से सेर भर मूली ला
खेवा लेके पार कर दे

क ए कै   प ए पै   ज ए जै

चैन	पैर	कैसा	वैरी
चैत	बैठ	जैसे	पैसा
बैल	फैल	मैला	थैली

यह पाप का फल है।
आज के दिन धूप का तेज है।
जैसा गुरु वैसा चेला।
हे सेठ यह किस का धन है।
उस पार पैर फिर इस पार आ।
तीन दिन से धूप धूल है।
यह जन भाट की जात का है।
कुछ जल ला फिर भूमि पर डाल।
कुछ दूध ला तब बैठ जा।
चुप सा बैठ जा सेज के पास।
थैली के पैसे गिन लेना।

ओ ो

क ओ--को   ख ओ--खो

कोट	मोम	झोक	टोपी
तोप	जोत	कोप	रोना
दोष	खोज	डोल	कोठी

बोझ को ढो ले । दोष किसी पर मत लगा ।
मोर को मोल लो । तुम उसको खोजो ।
दोष है तो शोक है । गोरू बैल को खोल दो ।

औ ौ

क औ--कौ   च औ चौ

कौन	चौथ	ठौर	बोली
खौल	छौंक	डौल	गौरिया
चौक	भौर	पौध	तोला

गौ को दुह तब दूध मुझ पास ला ।
धान को सब एक ठौर करो तब तौलो ।
चौक को जाके लौकी मोल ले फिर लौट आ ।

ऋ अः

क ऋ--कृ   प ऋ-- पृ

कृत	मृग	ऋण	ऋणी
नृप	गृह	मृत	मृजा
आः	छः	निः	दुःख

गृह तो घर ही है।
मृग एक बन का पशु है।
जिस का ऋण है सो ऋणी है।
नृप है नर का पति वा राजा।
अब छः बजा है।

क अं कं   ज अं जं

अंत	खूंट	छींक	चौंक
आंख	ठोंक	फूंक	झोंक
ऊंच	भौंर	गेंद	सिंह
कंठ	मूंज	हां	नहीं

यह भैंस का खूंटा है। झील में जोंक हैं।
हां ये बातें सच हैं। उस का डंक है।
इस सांप के विष है कि नहीं।

ड ड़ ढ ढ़

एड़ी	छेड़	बड़	लाड़
उड़	गुड़	फोड़	बाढ़
मुड़	भीड़	कोढ़	डाढ़ी
डेढ़	डाढ़	जोड़	मोढ़ा
धड़	जड़	मढ़	पढ़ो
आड़	पीड़	कीड़ा	गढ़ो

पेड़ की जड़ मत तोड़ो।
कंगाल से मुंह न मोड़ उसे भीख दे।
काठ को गढ़ो और ढोल को मढ़ो।
गढ़ से आड़ है और घर से लाड़ है।
जो चौक में भीड़ हो तो लौट आना।
पाप से मुंह मोड़।
छेड़ छाड़ बुरी बात है।
इस को जो तुम ने तोड़ा तो फिर जोड़ो।
मेरे पास कुछ पैसे और कौड़ी हैं।
पढ़ो लिखो तो तुम को ज्ञान होगा।

र क र्क   र ल र्ल

भर्म	धर्म	कार्ज	बर्छा
मार्ग	नर्म	कर्म	बर्त्तन
गर्ब	मूर्ख	तुर्क	नर्कट
सर्प	बुर्ज	घर्र	तर्कुल

धर्म का मार्ग भला है।   बर्छा डाल दे।
गर्ब न किया कर।   बुरा कर्म मत कर।
मूर्ख के साथ ना जा।   बुर्ज में तुर्क लोग है।



अब संयुक्त अक्षर लिखते हैं।

क य क्य क त क्त क क क्क क र क्र क ल क्ल
क्या मुक्ति टक्कर क्रोध क्लेश

ग ग ग्ग ग न ग्न ग य ग्य ग र ग्र
लग्गी अग्नि ग्यारह संग्रह

ज ज ज्ज ज व ज्व च च च्च च छ च्छ
लज्जित ज्वाला कच्चा अच्छा

ट ट ट्ट ट ठ ट्ठ ड ड ड्ड ल ल ल्ल
मिट्टी ठट्ठा हड्डी पिल्ला

लग्गी से ठेलो क्या तुम को इस की शक्ति है।
क्रोध मत करो धिक्कार की बात मत बोलो।
कच्चा फल खाना अच्छा नहीं है।
हमारी मुक्ति भक्ति क्योंकर होगी क्या करें।
उस रोगी को ग्यारह दिन से ज्वर आता है।
बिच्छू जो डंक मारे तो बड़ा क्लेश होता है।

त त- त्त	त थ-त्थ	त प त्प	त न- त्न
पत्ती	पत्थर	उत्पत्ति	रत्न
त र त्र	त म- त्म	त य- त्य	त व त्व
पुत्र	आत्मा	सत्य	तत्व
द द-द्द	द व- द्व		द- र द्र
गद्दी	द्वारा		मुद्रा
द य द्य	द म- द्म	ब र ब्र	ब द ब्द
विद्या	पद्म	ब्रत	शब्द

मेरे आत्मा का त्राण किस के हाथ में है।
फिर मेरा मन जो अशुध है कौन शुध करेगा।
बहुत शब्दों में संयुक्त अक्षर हैं।
विद्या से ज्ञान होता फिर ज्ञान बड़ा रत्न है।
जगत की उत्पति छः दिन में हुई।
इस चिट्ठी के उत्तर में मैं क्या लिखूं ।

प त- प्त	प र- प्र		प न-प्न
लिप्त	प्राण		स्वप्न
म म-म्म	म न- म्न	म प-म्प	म ह-म्ह
अम्मा	मेम्ना	काम्पना	तुम्हारा
न न न्न	न द- न्द	न ध न्ध	न त न्त
बिन्ना	हिन्दू	अन्धा	सन्तान
न थ न्थ	न य-न्य	न ह न्ह	य य य्य
ग्रन्थ	न्याय	चिन्ह	कार्य्य

हिन्दू और मुहम्मदी इस देश में रहते हैं।
सत्य धर्म्म का ग्रन्थ बैबल है।
प्रभु के कार्य्य सब दया और न्याय के कार्य्य हैं।
जो पाप में लिप्त रहेगा नरक को जावेगा।
हम सब आदम के स ान हैं।
यह कंगाल अन्धा होके उत्पन्न हुआ।

ण ठ- ण्ठ	ण ड-ण्ड	ण-ढ ण्ढ	ण- य ण्य
कण्ठ	पण्डित	ठण्ढा	पुण्य
स-स स्स	स क-स्क	स थ-स्थ	स म स्म
निस्सन्देह	इस्कूल	स्थान	स्मरण
स त-स्त	स त र-स्त्र	स य-स्य	स व-स्व
हिन्दुस्तान	स्त्री	स्याना	स्वर्ग
श न-श्न	श च-श्च	श र श्र	श व- श्व
प्रश्न	निश्चय	श्री	ईश्वर
ष ट ष्ट	ष ठ-ष्ठ	ष प- ष्प	ष य-ष्य
कष्ट	श्रेष्ठ	निष्पाप	मनुष्य

कोई मनुष्य सत्य पुण्य कर नहीं सकता।
यह इस्कूल का स्थान है पण्डित पढ़ाते हैं।
प्रश्नोत्तर की पुस्तक को कण्ठ करो।
श्री परमेश्वर स्वर्ग में है।
जो प्रभु पर बिश्वास न करेगा नष्ट होगा।
पुरुष स्त्री ईश्वर के साम्हने एक समान हैं।

लड़कों और लड़कियों दोनों को पढ़ाना है।
अपने पढ़ानेहारे का कहा मानो।
जो काम न करे उसे खाने को न मिले।
ईश्वर दिन भर मुझ को देखता है।
बूढ़ों और जवानों सब को मरना है।
मैले लड़के से हर एक घिणावेगा।

एक सच्चा और निराकार परमेश्वर है।
परमेश्वर ने सब कुछ उत्पन्न किया है।
परमेश्वर पवित्र और धर्म्मी और न्यायी है।
वह पापी को उसके पाप का दण्ड देगा।
धर्म्म परमेश्वर से है पाप शैतान से है।
ईश्वर की न सूरत है न मूरत है।

हिन्दुस्तान एक बड़ा देश है।
कलकत्ता उस का राज नगर है।
पृथिवी नारंगी की सूरत पर गोल है।
सूर्य्य चांद और तारों की पूजा मत करो।

उनके बनानेहारे ईश्वर की पूजा करो।
प्रभु यीशु मसीह जगत का मुक्तिदाता है।
मेरी देह में आत्मा है जो कभी न मरेगा।
पशु में केवल जीव है आत्मा नहीं है।
हर एक जन का मन पाप से मैला हो गया।
प्रभु यीशु मसीह जगत में आया था।
वह पापियों के पाप का भार उतारने आया।
प्रभु यीशुने पापियों के लिये अपना प्राण दिया
जो कोई अपनी मुक्ति का आशा यीशु पर रखे
उसको वह ग्रहण करके मुक्ति देगा।

भोर की प्रार्थना

हे प्रभु आज के दिन अपनी आशीष मुझे दे
मेरी रखवाली कर और मुझे सब पाप से बचा।
यह मैं प्रभु मसीह के नाम से मांगता हूं।

आमीन॥

सांझ की प्रार्थना ॥

हे प्रभु इस रात में मुझ पर दृष्टि कर और मेरे सब पापों को क्षमा कर और मुझे अच्छा लड़का बना। यह मैं प्रभु मसीह के नाम से मांगता हूं। आमीन।

ईश्वर की दस आज्ञाएं ॥

१ मेरे साम्हने तेरे लिये दूसरा ईश्वर न होगा।
२ मूरत पूजा मत कर।
३ परमेश्वर का नाम हलकाई से मत ले।
४ बिश्राम के दिन पर संसारी काम मत कर।
५ अपने माता पिता का आदर कर।
६ मनुष्य हत्या मत कर।
७ व्यभिचार मत कर।
८ चोरी मत कर।
९ झूठी साक्षी मत दे।
१० किसी के चीज़ का लालच मत कर।

[illegible]वि
[illegible]ा
[illegible]ा